بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 21 Agust 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(ज़हूर महीने की तिथि 21,1405 हश)

शुक्र गुज़ारी के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलै. का अमली नमूना।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 21.08.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب.143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरः अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने असहाब को अल्लाह तआला की नेअमतों पर शुक्रगुज़ारी की तरफ निहायत गहराई से तवज्जो दिलाते थे। हज़रत पीर सिराजुल हक़ साहब नोमानी बयान करते हैं कि एक मौक़े पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनसे मियाँ बख़्श सौदाई के साथ होने वाले झगड़े का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया। आपं ने समझाया कि सौदाई मज़नून मरफ़ऊल क़लम होता है, इस लिए ऐसे शख़्स से बहस व तकरार करने के बजाए हुस्न-ए-सुलूक करना चाहिए। दुनिया ऐसे लोगों को मजज़ूब, वली अल्लाह और क़ुतब साहब कहती है जो कि गलत कहती है, लेकिन हक़ीक़त में ये लोग बहुत सी नेअमतों से महरूम होते हैं। वो अक़्ल, ज़ेहन, लिबास, खाने पीने की लज़्ज़त, बीवी बच्चों और उनकी परवरिश की नेअमतों, अल्लाह तआला की शिनाख़्त व मअरिफ़त, ज़ात व सिफ़ात के उलूम, रसूल और नबी की शान और इत्तेबा, क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत, इसके मआनी व इसरार व मआरिफ़ व निकात, शरीअत व तरीक़त, नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात के हसूल-ए-सवाब और दरजात से महरूम होते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐसे लोगों को देखकर बहस करने के बजाए अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने हमें इन नेअमतों से महरूम नहीं किया। हमें अक़्ल व ज़ेहन अता किया, क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत और इसके इल्म व इसरार व मआरिफ़ व निकात से बहरा-वर किया, हलाल व हराम की तमीज़ दी, रसूलों की शिनाख़्त की तौफ़ीक़ दी और अपनी ज़ात व सिफ़ात का इल्म अता फ़रमाया। पस हर अहमदी को जायज़ा लेना चाहिए कि वो अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी का हक़ किस हद तक अदा कर रहा है।

इसी शुक्रगुज़ारी का एक निहायत मुअस्सिर वाक़िया हज़रत मलिक मोहम्मद हसन मोहम्मद साहब बयान करते हैं। हुज़ूर फज्र की नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाए तो बाद नमाज़ ख़ुद्दाम से दरयाफ़्त फ़रमाया कि रात

को सारंगियाँ और तंबूरे कहाँ बजते रहे हैं। बताया गया कि मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहब ने कंचनी को बुलाया हुआ था और बीस रुपये रात का वादा किया था, इस लिए वो सारी रात नाचती और गाती रही। हुज़ूर पुरनूर ने लंबी आह भरकर फ़रमाया: अल्लाह ये किस क़दर नमक हलाल है। यानी वो औरत बीस रुपये के एवज़ सारी रात जागती रही, जबकि हम अपने हक़ीक़ी ख़ालिक़ व मालिक के लिए एक दो घंटे भी नहीं जाग सकते, जिसने हमें बेशुमार नेअमतों से मुतमत्ते फ़रमाया है। आपं ने ये बात कई मर्तबा दोहराई और फ़रमाया कि हम अल्लाह तआला की बेशुमार नेअमतों का शुक्र अदा नहीं करते, नवाफ़िल और नमाज़ों की तरफ तवज्जो नहीं देते और फज्र की नमाज़ के लिए उठना भी हमारे लिए मुश्किल हो जाता है।

हुज़ूर फ़रमाते हैं! पस हर अहमदी को इस हवाले से अपना जायज़ा लेना चाहिए कि किस हद तक हम अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी का हक़ अदा कर रहे हैं।

हज़रत शेख़ मोहम्मद इस्माईल साहब सरदावी बयान करते हैं कि हुज़ूर की आदत थी कि खाना खाते वक़्त सुब्हान अल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह कहा करते थे और इस तरह खाते जैसे किसी चीज़ की तलाश कर रहे हों। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी बयान फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम रोटी का छोटा सा टुकड़ा मुँह में डालकर अच्छी तरह चबाते रहते, बड़ा लुक़्मा न लेते और साथ ही सुब्हान अल्लाह सुब्हान अल्लाह कहते जाते। फिर कुछ देर बाद उसमें से कोई टुकड़ा सालन लगाकर खाते। यूँ खाने जैसी मामूली नजर आने वाली नेअमत में भी अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी नुमायाँ थी।

हज़रत सैयद ज़ैनुल आबेदीन वली अल्लाह शाह साहब बयान करते हैं कि जब इलाक़े या शहर में ताऊन नमूदार होती तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने घर, बोर्डिंग हाउस और तमाम अहबाब के घरों की सफ़ाई का एहतेमाम फ़रमाते और गंधक, आग, फिनाइल और गूगुल वगैरा से जरासीम को हलाक करने की ताकीद फ़रमाते। आपं फ़रमाया करते थे कि असबाब से काम लेना भी अल्लाह तआला की नेअमत का शुक्र अदा करना है। अल्लाह तआला ने ऐसी चीज़ें पैदा की हैं जो बीमारियों और वबाओं के असरात को दूर करने का ज़रिया बनती हैं। इस लिए असबाब को तर्क करना शरीअत-ए-इलाहिया के ख़िलाफ़ है। अलबत्ता तवक्कुल का मक़ाम इसके बाद है कि असबाब इख़्तियार करके उन्हीं पर भरोसा न किया जाए बल्कि असबाब के पीछे ख़ुदा तआला के हाथ को देखा जाए।

हज़रत मोहम्मद इब्राहीम साहब एक वाक़िया बयान करते हैं कि 1904 ई. में गुरदासपुर में मुक़द्दमा करम दीं के सिलसिले में क़ियाम के दौरान एक दोस्त ताज़ा पकी हुई खजूरें लाए। किसी ने उन्हें गर्म क़रार दिया तो बताया गया कि प्याज़ खाने से उनका असर ज़ाइल हो जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ख़ूब सामान किया हुआ है कि हर एक चीज़ का मुसलेह भी मौजूद है। आपं ने आम और जामुन और केले और कच्चे चावल की मिसालें बयान फ़रमाईं और इसके बाद इंसान के लिए अल्लाह तआला के रूहानी और जिस्मानी आला इंतज़ामात का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि इंसान उनका शुक्र भी अदा नहीं कर सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बीमारी से शिफ़ा पाने पर भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा फ़रमाया। तज़किरातुश्शहादतैन लिखते वक़्त आपं को सख़्त दर्द-ए-गुर्दा पैदा हुआ और आपं ने ख़याल किया कि शायद ये तालीफ़ मुकम्मल न हो सके। रात को आपं ने घर वालों को जमा करके दुआ की और साहबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ के तसव्वुर से दुआ की कि अल्लाह तआला इस किताब को मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ दे। दुआ के बाद आपं पर ग़नूदगी तारी हुई और इल्हाम हुआ: सलामुन क़ौलम मिर रब्बिर रहीम। सुबह छह बजे

से पहले आप बिल्कुल तंदुरुस्त हो गए और उसी रोज़ तरीबन निस्फ़ किताब लिख ली। आख़िर में फ़रमाया: फ़लहम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बराहीन-ए-अहमदिया की तसनीफ़ व इशाअत में माली इआन्त करने वालों के नाम भी दर्ज फ़रमाए और उनके लिए दुआ की तहरीक फ़रमाई। इन मुआवैनीन में ऐसे लोग भी थे जिन्होंने पाँच रुपये, दो रुपये हत्ता कि दो आने भी दिए। आप ने उन तमाम मुआवैनीन का शुक्रिया अदा करते हुए फ़रमाया कि उनकी करीमाना तवज्जोहात से दीनी मक़ासिद ज़ाया होने से महफ़ूज़ रहे और मेहनतें बर्बाद होने से बच गईं। आप ने उनके नाम इस लिए भी दर्ज किए कि जो लोग किताब से फ़ायदा उठाएँ वो आप और मुआवैनीन के लिए दुआ-ए-ख़ैर करें।

हज़रत अक़दस मियाँ मंज़ूर मोहम्मद साहब का ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी कापी नवीसी की ख़िदमत और इख़लास का शुक्रिया अदा फ़रमाया। आप ने बयान फ़रमाया कि वो दुनिया के लिए नहीं बल्कि महज़ दीन की मोहब्बत से काम करते हैं और अपनी जानफ़िशानी से ख़िदमत अंजाम देते हैं। आप ने इस क़िस्म के मुख़लिस मुआवैनीन को अल्लाह तआला की अनायत क़रार दिया और उनकी ख़िदमात को अपने दीनी कामों की तकमील के लिए मुअय्यद असबाब क़रार दिया।

हज़रत शेख़ यअकूब अली साहब इरफ़ानी बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुद्दाम के छोटे-छोटे कामों की भी क़द्र फ़रमाते और उनकी दिलजोई करते थे। जब कोई किताब या रिसाला जल्दी शाया करना मक़सूद होता और रातों को काम होता तो प्रेस के कारकुनों के लिए दूध और दूसरी चीज़ें ख़ास तवज्जो से मुहैया फ़रमाते, मअमूल से ज़्यादा उजरत देते और उनकी कारगुज़ारी पर ख़ुशी और शुक्रिया का इज़हार फ़रमाते।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अंबिया का दिल बड़ा शुक्रगुज़ार होता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें जब दिन रात छपती थीं तो आप कई-कई रातें नहीं सोते थे, लेकिन अगर रात को कोई शख़्स प्रूफ़ लेकर आता तो उसकी आवाज़ पर खुद उठकर प्रूफ़ लेते और फ़रमाते: जज़ाकल्लाहु अहसनल जज़ा। आप उस शख़्स की तकलीफ़ को महसूस करते और फ़रमाते कि ख़ुदा उसे जज़ा-ए-ख़ैर दे। इससे ज़ाहिर होता है कि अंबिया के दिल में दूसरों के एहसान और तकलीफ़ का बहुत अहसास होता है।

हाफ़िज़ नबी बख़्श साहब का बयान है कि एक मर्तबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बाग़ में सैर फ़रमा रहे थे। आप के हाथ में बीद का असा था जो दरख़्त में अटक गया। कई असहाब उसे उतारने की कोशिश करते रहे मगर कामयाब न हुए। नबी बख़्श साहब ने दरख़्त पर चढ़कर असा उतार लिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस पर बहुत ख़ुश हुए और बार-बार उनकी तारीफ़ फ़रमाते हुए कहा कि मियाँ नबी बख़्श ने कमाल किया कि दरख़्त पर चढ़कर फ़ौरन सोटा उतार लिया। आप छोटे बड़े सब से एहतराम से ख़िताबी होते थे।

डॉक्टर मीर मोहम्मद इस्माईल साहब बयान करते हैं कि हज़रत साहब के लिए जब कोई शख़्स तोहफ़ा लाता तो आप बहुत शुक्रगुज़ार होते और घर में भी उस शख़्स के इख़लास का ज़िक्र फ़रमाते। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने एक और वाक़िया बयान किया कि डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहब आगरा से क़ादियान आते तो हज़रत साहब के लिए ख़ुरमे (बालूशाही क़िस्म की मिठाई) लाते थे। एक मर्तबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सुबह से खाना नहीं खाया था, मगर जब मालूम हुआ कि आगरा से आप के लिए ख़ुरमे लाए गए हैं तो बहुत ख़ुश हुए, उन्हें पसंद किया, तारीफ़ फ़रमाई और कुछ अपने लिए रखने को कहा।

गुरदासपुर में मुक़द्दमा करम दीं के दौरान माली तंगी के वक़्त डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहब ने अपने घर का मौजूद माल भेज दिया और आइंदा आमदनी भी भेजते रहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी इस क़ुर्बानी को महसूस करते हुए उन्हें लिखा कि आपने क़ुर्बानी की हद कर दी है, अब चंदा देने की ज़रूरत नहीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि पहले वो फ़र्ज़ के तौर पर चंदा देते थे और बाद में शुक्रिया के तौर पर भी देते रहे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी औलाद को वसीयत के चंदे से मुस्तस्ना क़रार दिया, मगर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद 'अफ़ला अकूनु अब्दन शकूरा' याद आया, यानी क्या मैं शुक्रगुज़ार बंदा न बनूँ। चुनाँचे मैंने शुक्रिया के तौर पर चंदा देना शुरू किया और मेरा चंदा मूसियों से ज़्यादा हो गया। फिर मुझे इल्हाम हुआ: 'اعملوا ال داؤد شکرا इअमलू आ-ल दाऊद शुकरा'। चुनाँचे मैंने शुक्र के तौर पर बहुत चंदा दिया।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वसीयत के मुताबिक़ इस्तस्ना सिर्फ़ आपके पाँच बच्चों के लिए था, न उनकी औलाद, बेटों की बीवियों या बेटियों के ख़ावंदों के लिए; जो वसीयत करेगा उसे वसीयत का चंदा और जायदाद का हिस्सा देना होगा। बहिश्ती मक़बरा में तदफ़ीन की इजाज़त भी इन पाँच बच्चों के लिए थी, ताहम हज़रत अम्माँ जान और आपं की औलाद ने बहुत क़ुर्बानियाँ कीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद किसी ख़लीफ़ा या ख़ानदान के फ़र्द को इस्तस्ना नहीं था; सब ने वसीयत की, चंदा दिया और दीगर तहरीकात में भी हसब-ए-इस्ततआत हिस्सा लिया। ये सिर्फ़ उन पाँच बच्चों को इस्तस्ना था ये वज़ाहत मैं इस लिए कर रहा हूँ बअज़ जगह से मुझे एक सवाल पहुँचा था।

हज़रत मियाँ सदरुद्दीन साहब बयान करते हैं कि एक मर्तबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चराग़ चपरासी को एक पैसा देकर रेवड़ियाँ मँगवाईं। जब रेवड़ियाँ आईं तो आपं ने उनके दो हिस्से किए और एक हिस्सा उसे देने लगे। उसने लेने से इनकार किया तो आपं ने फ़रमाया कि पैसा मेरा था मगर मेहनत तुम्हारी है, तुम लेकर आए हो, इस लिए निस्फ़ तुम्हारा है। ये भी दूसरों के काम की क़द्रदानी और शुक्रगुज़ारी का एक अंदाज़ था।

एक मौक़े पर बटाला में दोस्तों ने चाय का इंतज़ाम किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चाय पिलाने वालों के बारे में दरयाफ़्त किया और उनकी ख़िदमत का शुक्रिया अदा किया। बाद में अख़बार में भी उन लोगों की ख़िदमत का ऐलान करके शुक्रिया अदा फ़रमाया। इससे मालूम होता है कि आपं किसी की छोटी से छोटी ख़िदमत को भी नज़रअंदाज़ नहीं फ़रमाते थे बल्कि उसकी क़द्र करते और शुक्रिया अदा करते थे।

अल्लाह तआला हमें भी शुक्रगुज़ारी के आला मइयार इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ
يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131